प्रार्थनाके विशेष अंग

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाओी देसाओी अंक ५१

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १६ फरवरी, १९५२

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

अिस्लामकी सीख

[ता० ६-११-'५१ को अलीगढ़ विद्यापीठमें विनोबाजीका दिया हुआ भाषण]

मेरे प्यारे भाअियो,

आज मुझे बहुत खुशी है कि मैं आप लोगोंके बीच आ सका हूं। अिस जगहके बारेमें मैंने बहुत सुन रखा था और कभी यहां आनेका मौका मिलेगा, अैसा भी मान रखा था। जब तक गांधीजी थे, वे देशमें घूमते थे। अिसलिअे तब तक मैंने देशमें घूमनेका सोचा ही नहीं। वे मुल्कसे जो काम लेना चाहते थे, अुन कामोंमें जो कुछ मुझसे हो सकता था, अुसमें मैं लगा रहता और अुसीमें मुझे खुशी होती थी अेवं शांति मिलती थी। लेकिन गांधीजीके जानेके बाद कुछ अैसी हालत पैदा हो गअी, जिसके कारण लोगोंने कहा और मुझे भी लगा कि मुझे देशमें घूमना चाहिये। पहले साल दो साल मैंने अिधर-अुधर घूमकर देख लिया। कुछ सेवाका काम करनेका मौका मिला। खासकर मेवातमें तो कुछ ठीक काम हो सका।

तेलंगानाका काम

फिर मैं अपने आश्रममें पहुंचा और सोचने लगा कि अिस देशमें शांतिका तरीका चलाना हो और देशकी तरक्की भी शांतिके तरीकेसे करनी हो, तो रेलमें घूमने-फिरनेसे कोअी नतीजा नहीं निकल सकता। क्योंकि मुझे तो लोगोंके दिलोंमें प्रवेश करना था। परन्तु रेलवे और मोटर आदिके प्रवाससे वह काम नहीं हो सकता था। अिसलिअे मने पैदल चलनेका तय किया। यह नहीं कि मने अैसा कोअी व्रत ले लिया कि 'और किसी साधनका अिस्तेमाल ही नहीं करूंगा', लेकिन पैदल चलकर देहात-देहातमें प्रेमका पैगाम लोगोंको सुनाना मैंने जरूरी समझा। आपमें से कुछ लोग जानते होंगे कि मुझे पिछले दिनों तेलंगानामें जानेका मौका मिला था। वहांकी हालतका बयान मैं लफ्जोंमें नहीं कर सकता। सारे लोग डरे हुअे थे। जमींदार लोग देहात छोड़कर भाग गये थे, शहरोंमें जाकर रहते थे। धनवान लोग भी भाग गये थे। जान-मालको काफी नुकसान पहुंच चुका था। कम्युनिस्टोंसे लोग तंग आ चुके थे। अिधर रातको कम्युनिस्ट आकर सताते थे, तो दिनमें मिलिटरी और पुलिस परेशान करती थी। अिस तरह जनता दोनोंसे तंग आ चुकी थी। अैसी हालतमें मैं वहां पहुंचा। मैं यहां सारा किस्सा बयान नहीं करूंगा। अितना ही कह देना काफी होगा कि मैंने, जितनी मुझसे हो सकती थी, सबकी सेवा करनेकी कोशिश की। श्रीमानोंकी, गरीबोंकी, कम्युनिस्टोंकी, किसानोंकी, कांग्रेसियोंकी, मुझसे जितनी भी बन सकी, मैंने सेवा की; क्योंकि मुझसे जितनी कोशिश खुद गरीब बननेकी हो सकती थी अुतनी मैंने की थी, अिसलिअे गरीबोंके लिअे मुहब्बत होना लाजिमी था। परंतु श्रीमानोंका भी मैं दोस्त था और कम्युनिस्टोंका भी। कम्युनिस्ट छिपकर रहते थे। जंगली जानवरोंकी तलाश होती है, वैसी अुनकी भी तलाश होती थी। मैं सोच रहा था कि कोअी अैसा रास्ता निकले जिससे शांति कायम हो सके। तब मेरे ध्यानमें आया कि यहां जमीनका अेक अैसा मसला है, जिसके हल होनेसे शांति कायम हो सकती है।

सरकारने शांति कायम करनेके लिअे वहां मिलिटरी भेज रखी थी, जिस पर पांच करोड़ रुपया सालाना खर्च होता था। लेकिन अैसे मसले मिलिटरीसे हल नहीं हो सकते। जहां सिर्फ शेरोंका शिकार करनेका सवाल हो, वहां मिलिटरी काम कर सकती है। लेकिन जहां विचारका मुकाबला करना हो, वहां विचारसे ही वह काम हो सकता था।

जमीनकी बात

तो यह जमीनका मसला मेरे ध्यानमें आ गया था। लेकिन जमीन मांगना कोअी आसान बात नहीं है। जमीनके लिअे बाप-बेटोंमें झगड़े होते हैं। और फिर, जैसे-जैसे आबादी बढ़ती जा रही है, जमीनकी कीमतें भी बढ़ती जा रही हैं। अिसलिअे जमीन मांगनेकी हिम्मत करना बहुत मुश्किल काम है। लेकिन मैंने परमात्माका नाम लेकर जमीन मांगना शुरू कर दिया। जो परमेश्वर सबके दिलोंमें मौजूद है, अुसकी हस्ती श्रीमानोंके दिलोंमें भी होनी चाहिये। अगर हमारे दिलोंमें परमेश्वर जागता है, तो सबके दिलोंमें वह जरूर जागेगा। अिसलिअे लोगोंको समझानेकी जितनी ताकत मेरे पास थी, वह सब मैंने लगा दी। आखिर लोगोंके दिल पिघल गये। वहांकी हालत पूरी सुधर गअी, अैसा नहीं कह सकते; परंतु अिसमें शक नहीं कि हालत काफी सुधरी है।

भगवान अधूरा काम नहीं करता

फिर मैं वर्धा आया और खेतीके काममें लग गया। बारिशके बाद अुत्तर दिशामें जमीन मांगते-मांगते गांव-गांव घूमता हुआ अब चला जा रहा हूं। मैं मानता हूं कि मुझे परमेश्वरने मांगनेकी प्रेरणा दी है, और जब अुसने मुझे मांगनेकी प्रेरणा दी, तो वह औरोंको देनेकी प्रेरणा भी देगा। वह अधूरा काम नहीं करता। बच्चेको पैदा करता है तो मांके पास दूधका अिंतजाम भी कर देता है। यह नहीं हो सकता कि वह भूख तो पैदा करे और खुराक पैदा न करे। अिसलिअे मेरा विश्वास है कि यह जो जमीन मांगनेका काम शुरू हुआ है, अुससे न सिर्फ हिन्दुस्तान बच जायगा, बल्कि सारी दुनियाको रास्ता मिलेगा। दुनियाके सामने जो मसले हैं, अुनके हलके लिअे अुन्होंने दूसरे तरीके अख्तियार किये हैं। अगर अुन्हें ठीक रास्ता मिल जाय, तो वे अुस रास्तेसे जावेंगे।

ये चंद शब्द मैंने अपने हालके कामके बारेमें कहे। अब आप लोगोंके लिअे कुछ बातें कह दूं।

अपने पर काबू पानेका हल

आप सब लोग तालीबे-अिल्म हैं, विद्यार्थी हैं। बगैर पढ़े अिन्सानकी प्रगति नहीं हो सकती। अिस वास्ते अपनी जिन्दगीके कुछ साल पूरे

www.vinoba.in

पढ़ाओंमें ही लगा देते हैं, यह ठीक है। लेकिन अिल्मके साथ और भी कोअी चीज है, जिसके बगैर खाली अिल्म किसी कामका नहीं। मैं अपने अनुभवसे और बहुतोंके अनुभवसे कह सकता हूं कि सब अिल्मोंमें बड़ा अिल्म अपने खुद पर काबू पाना है। विद्यार्थियोंको और सबको वह अिल्म हासिल करना चाहिये। अुसके साथ सब अिल्म कारगर होते हैं। अुसके बगैर सब बेकार हैं। घोड़े पर अगर काबू है, तो सवारके लिअे घोड़ा कारगर है। लेकिन अगर काबू न रहा, तो घोड़ा ही सवार हो जाता है। यही हालत हमारे बारेमें है, अगर हम अपने पर काबू नहीं पाते। अपने पर काबू पानेका रास्ता बचपनमें ही पा सकते हैं। अिंद्रियों पर काबू पाना, मन पर काबू पाना बहुत जरूरी है। अगर हमें समझें कि हम ही मन हैं, *तो मनको हम दुरुस्त नहीं कर सकते। अिसलिअे यह* पहचाननेकी जरूरत है कि हम मन नहीं हैं। मन हमारा नौकर है, हम मनके मालिक हैं। बहुतसे लोग अपनेको आजाद मानते हैं। वे कहते हैं कि हम किसीका नहीं मानेंगे। हम किसीके गुलाम नहीं हैं, अपने मनकी करेंगे। मैं कहता हूं कि ठीक बात है, परंतु आपको अपने मनके मुआफिक नहीं करना चाहिये, अपने खुदके मुआफिक करना चाहिये। मनके मुआफिक करनेका अर्थ है "नौकरके मुआफिक करना।" मनमें तो अच्छाअियां और बुराअियां दोनों ही होती हैं। लेकिन हमें तो मनको नेक बनाना है। अिसलिअे अच्छाअियोंको बढ़ाना है, अुन पर अमल करना है और बुराअियोंको निकालना है। अुलटे, अगर हम मनको नेता बनाते हैं, तो हम आजाद नहीं रहेंगे। गुलाम बन जायंगे। अकसर लोग सोचते हैं कि हमें अपने जजबातके मुआफिक काम करना चाहिये। जजबात यानी भावनायें भापकी तरह होती हैं। भाप अगर अिंजनमें बन्द रहती है, तो ताकत पैदा करती है। अगर खोल दी जाती है, तो हवामें विलीन हो जाती है, ताकत नहीं प्रगट कर सकती। अिसलिअे करना यह चाहिये कि भावनाओंको परखते रहना चाहिये, सबसे काम लेना चाहिये। अगर सब रखते हैं, तो जजबात रोकी हुअी भापके मुआफिक कारगर हो सकते हैं। बहादुर वे हैं जिन्होंने अपने जजबात पर काबू पा लिया, जो सोच-विचार कर काम करते हैं। अिसलिअे पहला काम अपने जजबात पर काबू पाना और अुन्हें ठीक रास्ते पर ले जाना है — अुस रास्ते, जिस रास्तेसे कामयाब लोग गये हैं। अुनसे (जजबातोंसे) हम नौकरकी तरह काम लें। मैं आशा करता हूं कि आप लोग अिस पर ध्यान देंगे। यह अमली विद्या है। किताबी विद्यासे यह नहीं हो सकेगा। किताबी विद्यासे लोग गुलाम बन जाते हैं।

अुत्पादन-कार्य बढ़े

दूसरी बात जो मुझे आपसे कहनी है, वह पैदावार बढ़ानेके बारेमें है। हमारे देशमें आज पैदावारकी बहुत कमी है। गायका दूध, अनाज, फल, कपड़ा — जिधर देखो अुधर सब तरहकी कमी ही कमी है। और हर तरहसे जरूरत अिस बातकी है कि पैदावार बढ़े। अैसी हालतमें हम लोगोंका फर्ज हो जाता है कि हम और जो चाहे काम करते हों, जो दुनियाकी निगाहमें जरूरी हों, तो भी बिना पैदावार किये हिन्दुस्तानका यह मसला हल होना संभव नहीं है। आप चाहे जैसी योजना बनाअिये, अगर सारे लोग अुसे कामयाब बनानेको तैयार नहीं होते हैं, तो वह योजना कागज पर ही रह जाती है। अिसलिअे हम सभीको, ख्वाह, वह विद्यार्थी हो या प्रोफेसर, व्यापारी हो या खरीददार, कुछ न कुछ पैदावार करनी चाहिये। अिसलिअे गांधीजीने हमारे सामने चरखा रखा था, जिसे छोटे-बड़े सभी अिस्तेमाल कर सकते हैं। लेकिन अुनका मकसद सिर्फ चरखेसे ही नहीं था। जो लोग कुदाली चला सकते हैं, वे कुदाली भी चलायें। जो चक्की चला सकते हैं, चक्की चलायें, बगीचेमें काम कर सकते हैं तो वैसा करें। लेकिन पैदावार बढ़ानेमें हाथ बंटाना सबका फर्ज है।

परमेश्वरने हरअेकको दिमाग दिया है, हरअेकको हाथ दिये हैं और भूख भी दी है। अगर अुसकी यह मंशा होती कि कुछ लोग पैदावार ही करते रहें और कुछ लोग दिमागी काम करते रहें, तो कुछको वह सिर्फ हाथ ही हाथ देता और कुछको सिर ही सिर; क्योंकि वह सब तरहकी ताकत रखता है। लेकिन अुसने अैसा नहीं किया। सबको भूख दी और काम करनेके लिअे हाथ भी दिये। यह नहीं हो सकता कि कुछ लोग केवल लिखने-पढ़नेका ही काम करते रहें और कुछको हाथका ही काम करना पड़े। जब हम अपने मुल्कमें सब तरहकी चीजोंकी कमी महसूस करते हैं — कपड़ेकी, दूधकी, अनाजकी — तो म आप लोगोंसे प्रार्थना करता हूं कि हम सबको कुछ न कुछ पैदावार करना ही चाहिये।

युनिवर्सिटीमें संस्कृतिका दर्शन हो

तीसरी बात यह है कि जिस जगह हम अभी आये हैं, अुसी जगहसे हमारे देशवाले आशा रखते हैं। यह अेक युनिवर्सिटीका स्थान है। अिसका प्रारंभ अेक अच्छे विचारसे हुआ है। हमारे देशका अितिहास बनानेमें अिस युनिवर्सिटीने काफी हिस्सा लिया है। हमें यहां हमारी संस्कृतिका दर्शन होना चाहिये। अिस देशमें अिस्लाम आया। अुसने अपनी खूबियां बख्शीं। क्रिश्चियानिटी आअी, अुसने भी कुछ खूबियां दीं। सबने अपनी-अपनी विशेषतायें दीं। हरअेकमें कुछ न कुछ गुण होते हैं, कमियां भी होती हैं, बुराअियां भी होती हैं। खूबियां लेने और बुराअियां छोड़नेका काम यह युनिवर्सिटी कर सकती है।

मुसलमानोंका हविर्भाग

हिन्दू और मुसलमान दोनोंकी खूबियोंसे हमारा यह देश बड़ा बना है। हर जमातने बुरे-भले दोनों तरहके काम किये हैं। बुराअियोंको भुलाना, अच्छाअियोंको बढ़ाना, अिसीमें देशका भला है। हिन्दुओंको यह नहीं समझना चाहिये कि अुन्होंने ही अिस मुल्कको बनाया है। मुसलमानोंने भी अिस मुल्कको काफी देन दी है। यह भी सोचना चाहिये कि आखिर ये सब लोग यहींके तो हैं। मुसलमानोंको भी यह सोचना चाहिये कि हिन्दू और हम अेक हीं हैं। हिन्दुओंकी तरह मुसलमानोंमें भी संत हुअे हैं। दोनोंके धर्मग्रंथोंका दोनोंको अध्ययन करना चाहिये।

निरामिष आहारकी ओर

हर धर्मकी कुछ न कुछ खूबियत होती है। मैं मानता हूं कि हमारे समाजको अेक न अेक दिन निरामिष आहार तक पहुंचना है। मैं जानता हूं कि अनाजकी कमीके कारण अिन दिनोंमें यह बात मुश्किल है, लेकिन कभी-न-कभी गोश्त छोड़ना होगा, जैसे जैनियोंने छोड़ दिया है; और हिन्दू धर्मकी अिस खूबीको अपनाना होगा। क्रिस्ती लोगोंने हिन्दुस्तानके कोढ़ियोंकी सेवा की। क्रिस्तियोंके जीवनमें सेवाकी भावना बहुत है। अीसाके जीवनमें भी यह भावना पायी जाती है। अीसाअियोंका यह गुण भी हमें लेना चाहिये।

अिस्लाममें अच्छे भाअीचारेकी भावना है। हमें यह गुण भी लेना चाहिये। मेरा मतलब यह है कि हर धर्मने समाजको कुछ न कुछ अच्छी चीजें दी हैं। हमें चाहिये कि अुनका अध्ययन करें और अुन्हें हमारे जीवनमें अुतारनेकी कोशिश करें। मैं आशा करता हूं कि हम अिस मुल्कमें प्रेमका वातावरण निर्माण करनेमें कामयाब हो सकेंगे।

सब रसूल अेक हैं

अेक बात और। मैंने अिस्लामका कुछ अभ्यास किया है। मैं यह नहीं कह सकता कि मैं अुसका आलिम बन गया हूं। लेकिन कुरान-शरीफको समझनेकी कोशिश मैंने की है। अिस्लामका कलमा

www.vinoba.in

"ला अिलाह अिल्लिल्लाह मुहम्मदुर् रसूलिल्लाह..." में बहुत पसंद करता हूं। अिसके अेक हिस्सेमें कहा गया है कि अल्ला अेक है। अिस बातको सभी मान सकते हैं। आगे कहा गया है कि मुहम्मद अल्लाहका रसूल है। अिसके मानी क्या समझे जायं? कुछ लोग अिसका मतलब यह बताते हैं कि मुहम्मद ही अेक अल्लाहका रसूल है। लेकिन यह अर्थ गलत है। अिस्लामने तो यह कहा कि "ला नुफर्रिकु बैन अहदिम् मिर्रुसूलिह्" यानी दुनियामें जितने रसूल हो गये हैं, अुन सबमें हम कोअी फर्क नहीं करते। यह अिस्लामका अेक बुनियादी यकीन है। अिसलिअे मुहम्मद अल्लाहका रसूल है, अिस कथनका सीधा अर्थ अितना ही है कि अीश्वरकी जगह कोअी नहीं ले सकता, मुहम्मद भी नहीं ले सकते। वह अल्लाहके अेक रसूल मात्र हैं।

मुहम्मद यानी भगवानका ही अेक रूप

यहां मुहम्मदका अर्थ सिर्फ मुहम्मद नहीं समझना चाहिये, बल्कि राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, अीसा, झरथुष्ट्र आदि सबका समावेश अुसमें समझ लेना चाहिये। अिस तरह अगर कलमेके अिस हिस्सेका हम व्यापक अर्थ लें, तो यह कलमा सारी दुनियाके लिअे सही हो सकता है। हां, कुछ लोग यह जरूर कह सकते हैं कि हमारे लिअे मुहम्मद पैगंबर काफी हैं। बच्चेके लिअे अुसके अपने पिता काफी होते हैं। दूसरोंके पिताका भी वह आदर करेगा, लेकिन अपने पिताकी निष्ठा अुसके लिअे पूरा आधार दे सकती है। वैसी ही यह बात है। जैसे सिक्खोंने कहा कि हमारे लिअे दस गुरु हो गये हैं और अिनके आगे कोअी गुरु नहीं होगा। वह अुनके लिअे ठीक हो सकता है, लेकिन सारी दुनियाके खयालसे यह नहीं कहा जायगा कि आगे कोअी गुरु होनेवाला ही नहीं है। परमेश्वरकी कुदरतके लिअे हम अिस तरहकी कोअी मर्यादा नहीं बना सकते। अपनी-अपनी श्रद्धाकी अेक मर्यादा होती है। अिसलिअे अपने निजके लिअे कोअी अेकाध गुरु, पैगंबर या मार्गदर्शक पर्याप्त हो सकता है और अैसा हम कह भी सकते हैं। लेकिन अुसका अर्थ यह नहीं होना चाहिये कि अुसमें किसी दूसरे मार्गदर्शकको या गुरुकी गुंजाअिश ही न रखी जाय। अिसी तरह व्यापक बुद्धि रखने पर सब धर्मोंका मेल हो सकता है।

अिस तरह आप देखेंगे तो पायेंगे कि हिन्दुस्तानके अिस्लामने अेक खास काम किया है, अेक खास देन दी है। मैं बाहरके अिस्लामकी बात नहीं कहता। अुसी तरह क्रिश्चियानिटीके बारेमें। मैंने मलबारमें देखा है कि शंकराचार्यके विचारोंके साथ अीसाके विचारोंका भी वे मेल कर देते हैं। अिसलिअे मेरा मानना है कि हिन्दुस्तानका अेक खास अिस्लाम है, और हिन्दुस्तानकी अेक खास क्रिश्चियानिटी भी है।

प्यारे भाअियो, मैंने जो कुछ कहा, खालिस प्रेमसे कहा। वैसे ही कहा है, जैसे अपनेसे कहता हूं।

विनोबा

सर्वोदय-संमेलन

आगामी सर्वोदय संमेलन सेवापुरी–काशीके पास–(अुत्तरप्रदेश) में तारीख १३, १४ और १५ अप्रैल १९५२ को होगा। यदि जरूरत रही तो संमेलन ता० १६ अप्रैलको भी चालू रहेगा।

संमेलनका निमंत्रण तथा रेलवे कन्सेशनके बारेमें जरूरी कागजात यथासमय भेजे जायेंगे। अिस बारेमें लिखा-पढ़ी चालू है।

सेवाग्राम, १०–२–'५२

वल्लभस्वामी
सहमंत्री

स्वराज्यकी प्रतिज्ञाकी पूर्ति

कैंप मलवान, जिला अेटा
२६–१–१९५२

"भगवान सोता था। परंतु तुलसीदासजीके लिअे जाग गया, क्योंकि तुलसीदासजीने अुसको जगाया। भगवानको यह खूबी है कि अुसे जरासा कोअी जगाने आवे, तो फौरन जाग जाता है। वास्तवमें वह जागता ही रहता है। सोनेका तो केवल बाम है। मैं गांव-गांव जाकर जरासा जगाता हूं, तो फौरन जाग जाता है। भगवान तो कसौटी लेता है। अगर जगानेवाले खुद सोते रहें, तो भगवान कैसे जागेगा? हम सब सेवक लोग ही अभी सो रहे हैं। कांग्रेसवाले सो रहे हैं। किसान मजदूर पार्टीवाले भी सो रहे हैं। तो मुझे पहले अिन्हें जगाना होगा। अिस समय सारेके सारे चुनावमें लगे हैं। और अब तक ६१ हजार अेकड़से ज्यादा जमीन मुझे मिली है। माधवतांडा नामक गांवमें अेक सौ बीस लोगोंने बारह हजार अेकड़ जमीन दी। अिसलिअे मैंने कहा कि भगवान सबके हृदयमें है और जगानेसे जाग जाता है।" अुपरोक्त अुद्गार आचार्य विनोबा भावेने आजकी प्रार्थना-सभामें कहे।

आज स्वतंत्रता दिवस होनेके कारण बीस-बाअीस बरस पहले ली गअी स्वतंत्रताकी प्रतिज्ञाकी याद दिलाते हुअे विनोबाजीने कहा: "स्वतंत्रताकी प्रतिज्ञाके अमलकी आज भी आवश्यकता है। स्वतंत्रता प्राप्तिके बाद अितना तो जरूर हुआ है कि सबको प्रौढ़ मताधिकार मिला है और अुसमें किसी तरहका भेदभाव नहीं माना गया है। न हरिजन-परिजनका, न गरीब-अमीरका, न शिक्षित-अशिक्षितका और न स्त्री-पुरुषका। परंतु स्वतंत्रताके बावजूद देश सुखी नहीं हुआ, क्योंकि प्रतिज्ञाकी बातोंमें से बहुतसी बातों पर अभी अमल करना बाकी है।"

अपना व्याख्यान जारी रखते हुअे विनोबाने कहा: "आज हमने अभी यहां आधा घंटा सूत-कताअी की। अिस तरह हम रोज सूत कातते हैं। १९२० में मैंने सूत कातना शूरू किया। हमारे आश्रममें हम सब अपने कपड़ेके लिअे कात लेते हैं और बुन भी लेते हैं। अिसलिअे बाजारकी तेजी-मंदीका हमारे कपड़े पर कोअी असर नहीं पड़ता। अगर आप लोग भी गांधीजीकी बात पर अमल करते, तो आपको आज कपड़ेके लिअे जो कालाबाजारमें जाना पड़ता है और आपका भागी बनना पड़ता है, अुसकी जरूरत नहीं पड़ती।" स्वराज्यके बाद खादी और भी कैसे जरूरी हो गअी है, यह समझाते हुअे अन्तमें विनोबाजीने कहा कि गांवके लोगोंको सुखी बनानेकी जो प्रतिज्ञा हमने की, वह अभी अधूरी है। हमें आज पुनः हमारी प्रतिज्ञाका स्मरण करना है।

खास तौरसे विनोबाजीने तीन बातोंकी ओर ध्यान दिलाया। अूंच-नीच भाव दूर करना, खादीको अपनाना और शराब छोड़ना। शराबको पंच महापापोंमें से अेक बताकर विनोबाजीने कहा: "जो शराब पीता है, वह किस मुंहसे अपनेको हिन्दू या मुसलमान कहता है? दोनों धर्मोंने शराबका निषेध किया है। लेकिन अगर कोअी पाप छोड़ देता है, पछताता है और अच्छे रास्ते पर आ जाता है, तो परमेश्वरके घरमें अुसका तिरस्कार नहीं है। हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्मोंमें यह सुविधा है। अिसलिअे आपमें से जो शराब पीते हैं, अुन्हें चाहिये कि वे अुसे छोड़ दें।"

विनोबाजी जहां जाते हैं, वहांकी जानकारी हासिल करते हैं। अुस तरह अिस गांवकी जानकारीके कागजमें अुन्होंने देखा कि अुसमें साठ फी सदी लोगोंके शराब पीनेका जिक्र था। तो पहले तो अिस बात पर अुन्हें विश्वास नहीं हुआ कि यहां अितने ज्यादा लोग शराब पीते होंगे। लेकिन जब अुन्होंने सभामें पूछा और लोगोंने स्वीकार किया, तो विनोबाजीके दिलको बहुत दुःख हुआ और अुन्होंने लोगोंसे

www.vinoba.in

अपनी भावपूर्ण वाणीसे शराब छोड़ देनेकी अपील की। अुन्होंने समझाया कि अगर शराबसे कोअी आनंद मिलता हो, तो वह सही आनंद नहीं है। वह तो पशुका आनंद है। सही आनंद तो सेवामें, दुःखियोंका दुःख दूर करनेमें मिल सकता है।

आज विनोबाजीको अिस छोटेसे गांवमें सौ अेकड़ जमीन मिली। अेटा जिलेमें अब तक कुल तेरह सौ अेकड़ जमीन मिली है। आज यहां आवागढ़के राजा सूरजपालसिंहजीने विनोबाजीसे जमीनके संबंधमें काफी देर तक चर्चा की।

विनोबाजी कल मैनपुरी जिलेमें प्रवेश कर रहे हैं। मैनपुरी जिलेमें तीन दिन रहकर वे तारीख तीसको अिटावा पहुंचेंगे।

दा० मूं०

हरिजनसेवक
१६ फरवरी १९५२

प्रार्थनाके विशेष अंग

अेक आदरणीय मित्र लिखते हैं:

"..... आपने १९ जनवरीके 'हरिजन' में 'सामूहिक प्रार्थनाओं' के प्रश्नकी चर्चा की है। अिस विषयमें मेरी गहरी दिलचस्पी होनेके कारण दक्षिण भारतमें सामूहिक प्रार्थना संबंधी हमारी चर्चाओं और पद्धतियोंका मार्गदर्शन करनेकी मैं कोशिश करना चाहता हूं। अुदाहरणके लिअे, जब हम अपनी सामूहिक प्रार्थनाओंमें अपने अवतारोंके नामोंका अुपयोग करते हैं, तब हमारे कअी अीसाअी मित्रोंको दुःख होता है। मुझे भी यह लगता है कि अवतारोंके नामोंका अुपयोग करनेके बजाय अीश्वरके लिअे सबके द्वारा स्वीकृत शब्दोंका अुपयोग करना ही बेहतर होगा। फिर भी, मैं अिस विषयमें ज्यादा पूर्णतासे पैठना चाहता हूं और अिसमें दिलचस्पी रखनेवाले मित्रोंकी सलाह लेना चाहता हूं। अिस संबंधमें आप कोअी सुझाव दें, तो मैं आपका आभार मानूंगा।"

आश्रमों और शिक्षण-संस्थाओंमें आम तौर पर जो प्रार्थनायें होती हैं, अुनके तीन या चार अंग होते हैं: (१) प्रार्थनामें अुपस्थित सब लोगों द्वारा रोज बोला जानेवाला पाठ। (२) अेक या दो भजन। ये भजन अकसर अेक या दो व्यक्ति गाते हैं और बाकीके लोग अुन्हें सुनते हैं, या कभी-कभी अेक या दो व्यक्ति पहले गाते हैं और बादमें लोग अुसे दोहराते हैं। (३) अेक साथ गाअी जानेवाली नामधुन या छोटे-छोटे पद। अुनमें सामान्यतः अीश्वर, देवताओं, अवतारों या पूज्य सन्तोंके नाम होते हैं; या सादे श्लोकों अथवा पदोंमें नैतिक अुपदेश या प्रेरक विचार दिये होते हैं। (४) किसी धार्मिक या अच्छी पुस्तकके किसी हिस्सेका पाठ या प्रवचन।

अिन चार अंगोंमें से केवल पहला अंग यानी सारे समूह द्वारा रोज बोलनेके लिअे निश्चित किया हुआ पाठ ही 'सामूहिक प्रार्थना' माना जाना चाहिये। चूंकि संस्थाके हर सदस्यसे प्रार्थनामें शरीक होने और पाठ बोलनेकी आशा रखी जाती है, अिसलिअे पाठके हर श्लोक या मंत्रमें अैसे विचार या भावनायें व्यक्त की हुअी होनी चाहियें, जो अुस संस्थाके किसी भी धर्मको माननेवाले समझदार सदस्यको मान्य हो सकें। बेशक, अुसने यह अंध श्रद्धा तो छोड़ ही दी होगी कि किसी खास धर्म-ग्रंथमें से किसी खास भाषामें चुनी हुअी प्रार्थना ही अीश्वरकी शुद्ध प्रार्थना हो सकती है; न अुसमें यही अंधश्रद्धा होगी कि अुसके धर्मसे बिलकुल भिन्न विचारों पर आधार रखनेवाले किसी विशेष धर्मके ग्रन्थसे चुना हुआ पाठ वह बोल ही नहीं सकता। अिसका अेक ठोस अुदाहरण लें: अगर अेक वैष्णव कहे कि वह प्रार्थनाके किसी पाठका केवल अिसलिअे विरोध करता है कि वह किसी शैव ग्रन्थका भाग है, अथवा कोअी अीसाअी या मुसलमान हिन्दू धर्मके अगाध साहित्यमें से लिये हुअे पाठका केवल अिसलिअे विरोध करे कि अुस धर्ममें अनेक देवी-देवता माने गये हैं और वह अीश्वरके अवतारोंमें विश्वास रखता है, अथवा अिसी तरह कोअी हिन्दू अीसाअी धर्म या अिस्लामके साहित्यमें से चुने हुअे पाठोंका विरोध करे, तो यह अेक अैसी मांग है जो सामूहिक प्रार्थनामें पूरी नहीं की जा सकती। लेकिन यह मांग जरूर अुचित होगी कि सामूहिक प्रार्थनाके लिअे जो विशेष पाठ चुना जाय, अुसमें अैसा कोअी विचार या भाव नहीं होना चाहिये, जिसका किसी धर्म द्वारा या नीतिशास्त्रके नियम द्वारा स्पष्ट निषेध किया गया हो।

हरअेक सदस्य द्वारा प्रार्थनाके पाठको स्वीकार करनेकी यह शर्त केवल प्रार्थनाओंके निश्चित पाठों तक ही सीमित रहनी चाहिये।

भजनों या नामधुनके बारेमें ज्यादा स्वतंत्रता दी जानी चाहिये। सामूहिक प्रार्थनाके सदस्योंके लिअे कोअी भजन या नामधुन गाना अनिवार्य नहीं होना चाहिये, और आम तौर पर अनिवार्य होता भी नहीं। किसी समय भजनकी भाषा अैसी हो सकती है, जिसे कोअी सदस्य नहीं समझता; अुसी तरह कभी किसी भजनमें अैसे भाव भी हो सकते हैं, जिनके साथ अुसका मन समरस नहीं हो पाता। जिस प्रकार भोजनके समय जो चीज हमें पसन्द नहीं होती, अुसे हम नहीं खाते और पसन्दकी चीज ही खाते हैं, अुसी प्रकार भजनों और नामधुनके बारेमें भी हमारा रुख होना चाहिये। तुलसीदासजीने कृष्णके बारेमें कोअी गीत नहीं रचे, न सूरदासने रामके बारेमें। तुलसीदासजीकी तरह संभव है रामका भक्त रामके विषयमें रचे गये भजन ही ज्यादा पसन्द करे; दूसरा कृष्णका भक्त हो सकता है, तीसरा शिवका, चौथा अीसाका, पांचवां और किसी देवी-देवता या पैगम्बरका। भजन या नामधुन गानेवालेकी वृत्तिके अनुसार रोज-रोज गाये जानेवाले भजन या धुनमें फर्क हो सकता है। अगर अुनमें किसी दूसरे धर्मके बारेमें कोअी बुरी बात नहीं कही गअी हो, तो जो अुत्साहके साथ कोअी भजन या नामधुन गानेमें शरीक न हो सकें, वे खामोशीके साथ आदरभावसे अुसे सुनते रहें। सामान्य शिष्टता या सभ्यताका अितना अुनसे तकाजा है।

नामधुनमें आम तौर पर अीश्वर या अुसके अवतारोंकी ही नामावली होती है। प्राचीन कालसे हिन्दुओंकी यह अेक विशेषता रही है। नामधुन बड़ी लोकप्रिय होती है। वह बोधप्रद भी होती है। वह बच्चों और बड़ों दोनोंको आकर्षित करती है — खासकर भोले-भाले श्रद्धालु स्त्री-पुरुषोंको। अुसके सादे संगीत और नियमित तालके कारण लोग अेकसाथ गाना आसानीसे सीख लेते हैं। अुसके विविध स्वर जनसमूहको मस्त बना देते हैं और बड़ी-बड़ी सभायें अुनके असरसे मंत्र-मुग्ध हो जाती हैं। ज्यादातर लोग धुनोंके शब्दों और अर्थ पर खास ध्यान नहीं देते। अुनके शब्द और अर्थ किसी खास धर्मके कुछ जोशीले अनुयायियोंको ही बेचैन बनाते हैं और यह जोश कभी-कभी अितना अनुचित होता है कि अुसे अीर्ष्याका नाम दिया जा सकता है। अिस तरह अेक वैष्णव शिवके नामोंवाली धुनको पसंद नहीं करता, और शैव विष्णुके नामकी धुन पसंद नहीं करता। अकसर रामका भक्त कृष्णके नामकी धुनको बर्दाश्त नहीं करता। बहुतसे आर्यसमाजी अवतारोंके नामोंका सख्त विरोध करते हैं और 'ॐ', 'सत्सत्', 'परमात्मा', 'ब्रह्म' जैसे शब्द तथा दैवी गुणोंके सूचक शब्द ही पसन्द करते हैं। कुछ अीसाअी भी अैसा ही करते हैं।

www.vinoba.in

कुछ मुसलमान राम और रहीम, कृष्ण और करीम नामोंको अेकसाथ जोड़नेका विरोध करते हैं। दूसरी तरफ कुछ हिन्दू अीश्वर और अल्लाके अेकसाथ अुच्चारणका विरोध करते हैं। अुनके विरोधका कारण यह नहीं है कि अल्लाका अर्थ अीश्वर नहीं होता, बल्कि यह है कि वह अीश्वरके लिअे अुपयोग किया जानेवाला मुस्लिम नाम है। अिस बारेमें बार-बार काफी विवाद खड़ा किया गया है। अिस संबंधमें कअी तरहके खुलासे दिये जाते हैं, परंतु वे हरअेकको प्रतीति नहीं करा पाते। मैं अिस बारेमें कोअी खुलासा देनेके बजाय प्रश्न करनेवाले भाअीसे अितना ही मान लेनेके लिअे कहूंगा कि किसी खास संदर्भमें नामधुनके नाम अीश्वर, अुसके अवतार, पैगम्बर वगैरा किसीका भी जिक्र क्यों न करें, वे सब लाखों-करोड़ोंके धार्मिक साहित्यके पूज्य और आदरणीय नाम हैं। अेक अीसाअी अीसाके नामके लिअे या अेक मुसलमान मोहम्मदके नामके लिअे जो पूज्यभाव रखता है, वह अुस पूज्यभावसे गुण या तीव्रतामें जरा भी कम नहीं है जो अेक हिन्दू राम, कृष्ण या शिवके लिअे रखता है। भक्त और अुसके भगवानके बीच हरअेक धर्मने किसी न किसीको रख दिया है। केवल अुसका नाम ही अलग-अलग है। अिसलिअे कोअी यह स्वीकार करे या न करे कि अीसा अीश्वरका पुत्र है या मोहम्मद अल्लाका पैगम्बर है या राम और कृष्ण अीश्वरके अवतार हैं, लेकिन यह तो अुसे स्वीकार करना ही चाहिये कि ये सब पवित्र नाम हैं, जो प्रत्येक धर्मके अनुयायियोंमें पूज्यभाव और धार्मिक भावनायें पैदा करते हैं। पवित्र नामोंके अुच्चारमें कोअी पाप नहीं है।

अिस संबंधमें यह याद रखना चाहिये कि सारी नामधुनोंमें हमेशा केवल अीश्वरके ही नाम नहीं होते। कुछ धुनोंमें केवल प्रसिद्ध सन्तोंके ही नाम होते हैं। अुदाहरणके लिअे, यह मशहूर धुन: "निवृत्ति, ज्ञानदेव, सोपान, मुक्ताबाअी, अेकनाथ, नामदेव, तुकाराम।" कुछ धुनोंमें केवल नैतिक अुपदेश ही होते हैं; जैसे, "दया धर्मको मूल है, पाप मूल अभिमान।" वगैरा वगैरा। अिसके अलावा, धुन गानेवाले अगुआको धुनके पाठमें फर्क करनेकी और नअी धुनें बनानेकी भी अिजाजत होती है। हर जगह अैसा किया जाता है।

अिसलिअे भजनों और धुनोंके संबंधमें संस्थाओंको मेरा यह सुझाव है कि हरअेक संस्था अपने आम अुपयोगके लिअे गाये जानेवाले भजनों और नामधुनोंकी अपने समझदार सदस्योंकी स्वीकृतिसे अेक सूची बना सकती है, लेकिन अगर कोअी नया आनेवाला या संस्थाका ही सदस्य कभी भिन्न प्रेरणासे कोअी दूसरा भजन या धुन गाये, तो सबको अुसे सहन कर लेना चाहिये। अिसी तरह संयोगसे कोअी अगर दूसरी संस्थाकी सामूहिक प्रार्थनामें शरीक हो, और वहां अुसके विचारोंसे भिन्न विचारवाला भजन या धुन गाअी जाय, तो वह भले अुसके गानेमें भाग न ले, लेकिन अुससे अुसे परेशान या दु:खी तो हरगिज नहीं होना चाहिये।

किसी धर्मके प्रवचनके समय या धर्मग्रन्थके पाठके समय भी अैसी ही वृत्ति धारण करनी चाहिये। अगर अुसमें कोअी अैसी बात न हो, जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूपमें दूसरे धर्मके महापुरुषों या ग्रन्थोंकी निन्दा या अपमान करनेवाली हो, तो सिर्फ अिसी बातसे दूसरे धर्मके श्रोताओंको परेशान नहीं होना चाहिये कि वक्ता या ग्रन्थ किसी विशेष धर्मके बारेमें बड़े आदर और प्रशंसासे बोलता है। बेशक, दूसरे धर्मोंकी निन्दा या अपमान करनेवाली बातोंका विरोध किया जाना चाहिये। अीसाअी और मुस्लिम धर्मोपदेशक अक्सर यह दोष करते पाये गये हैं; और हिन्दुओंका अुनके प्रति जो विरोध या वैमनस्य होता है, अुसका अेक कारण अुन अुपदेशकोंकी यह असभ्यता भी है। अैसी बात नहीं है कि स्वयं हिन्दू धर्मके विभिन्न सम्प्रदायोंके अनुयायी अिस दोषसे मुक्त रहे हैं। शैव, वैष्णव, जैन, सनातनी, आर्यसमाजी सभी धार्मिक अीर्ष्याके अैसे दर्जोंसे गुजरे हैं। लेकिन ये सब क्षणिक माने जाने चाहियें। जैसे-जैसे अनुभव बढ़ता है और गरमागरम वादविवाद शान्त होते हैं, वैसे-वैसे सर्व-धर्म-समभाव या कमसे कम सहिष्णुताकी भावना अपना काम करने लगती है।

वम्बअी, २६-१-'५२ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

हलवाहीके खेत

अुत्तर प्रदेश ही सारे प्रदेशोंमें अैसा प्रदेश है, जहांके जमींदार हलवाहाको मजदूरीके साथ थोड़ा खेत — २, ३ बीघा या अेक-दो अेकड़ — देते थे, जिसमें अधिकांश खेत सीरके खेत होते थे। जबसे जमींदारीको हटा देनेकी चर्चा शुरू हुअी, तबसे अब तक लाखों अेकड़ जमीनके अैसे खेत गरीब हलवाहोंसे निकाले गये। अिससे हजारोंकी संख्यामें लोग भूमिविहीन हो गये हैं। बलिया जिलेमें जो विरोधी शक्तियां अुपद्रव खड़ा कर सकीं और १६-१७ स्त्री, पुरुष और बच्चे मारे गये, अुसके मूलमें यही हलवाहीके खेतका निकालना था। जो परिवार वर्षोंसे पुश्त दर पुश्तसे हलवाही करके कुटुम्बका अंग बना था, अुसकी सेवाओंके लिअे पेंशन देनेकी बात तो दूर रही, दिया हुआ खेत — सहारा भी निकालकर भूल ही की गअी, अैसा कोअी भी न्यायप्रिय व्यक्ति कहेगा।

कहा जाता है कि अुत्तर प्रदेशमें ही अेक करोड़ अेकड़ जमीन अैसी है। हमारे पास सही आंकड़े तो नहीं हैं। पर अिसमें कोअी संदेह नहीं कि यह संख्या लाखोंसे कम है ही नहीं। अिस भूलका प्रायश्चित्त करनेका सुन्दर अवसर श्री विनोबाजीके भूमिदानने हम दिया है। हम दृढ़ताके साथ पर विनयसे अपने जमींदार भाअी-बहनोंसे निवेदन करते हैं कि वे अपनी यह निकाली हुअी जमीन अुन्हीं हलवाहोंको या अुनके परिवारको श्री विनोबाजीके द्वारा लौटा दें। वे भूमिदानका फार्म भरकर अुसमें अंकित कर दें कि यह जमीन हम अपने हलवाहोंको वापस करते हैं। हैदराबाद सरकारने विशेष कानून द्वारा श्री विनोबाजीको दी जानेवाली जमीनके दाता तथा पानेवालेको रजिस्ट्रेशन फीससे मुक्त कर दिया है। अन्य सरकारें भी अैसी ही व्यवस्था करनेवाली हैं। अिसलिअे अिसे लौटानेमें अुदारताके साथ खर्च आदिका कोअी प्रश्न अुपस्थित होनेवाला नहीं है। जो जमींदार सीधे जमीन वापस करनेमें संकोच रखते हैं, अुनको अेक संत द्वारा यह भूल सुधारनेका अवसर मिल जायगा। हमारा यह रोजका अनुभव है कि अपनी भूल स्वीकार करनेमें बड़ा संकोच होता है। पर जो भूल हमको या परिवारको खतरेमें डाले, विरोधी शक्तियोंका कार्यक्रम सफल बनानेमें सहायक हो, अुस भूलको जितना जल्द और सुन्दर ढंगसे हम सुधार सकें अुतना हमारा ही नहीं, हमारे खानदानका भी भला होगा। क्या ही अुत्तम दृश्य होगा जब गांवोंमें सभी ग्रामजन तथा पंचोंके संमुख जमींदार अपने हलवाहोंको अपनी प्यारी जमीन वापस करेंगे? कृतज्ञ हलवाहा अपने साथ की गअी ज्यादतीको भूलकर तुरन्त अुसे परिवारका फिर अेक अंग बन जायेगा। समय आ रहा है जब कि खेतिहर मजदूरके श्रमकी कीमत अुस जमीनसे भी कीमती समझी जायेगी। हमें पूरा भरोसा है कि समझदार जमींदार भाअी-बहन अिस सुवर्ण अवसरको अपने हाथसे न जाने देंगे।

बाबा राघवदास

उत्तरकी दीवारें

लेखक: काका कालेलकर; अनुवादिका: शकुन्तला

कीमत ०–१४–० डाकखर्च ०–२–०

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद–९

www.vinoba.in

दो और दिलाओ

आसमानके दो ग्रह

नैनीतालका पहाड़ी अिलाका अभी-अभी पार करके और पिछले मुकाम 'कीछा' से ४०० अेकड़के करीब भूमिदान प्राप्त करके आज सुबह ही विनोबा यहां आये। लम्बी दूर तक आम जनता और स्कूलके छात्र स्वागतके लिअे आये और गेंदेकी मालाओंके साथ अुन्होंने विनोबाजी पर प्रेमकी वर्षा की। सारी जमातोंके लोग अुनमें थे। अब भी विनोबाका पैर दुरुस्त नहीं हो पाया था, अिसलिअे वे बैलगाड़ीमें ही यहां आये। गाड़ी पर मानो गेंदोंकी फूलझड़ियां बरस रही थीं।

११ बजे सूबेके मुख्य मंत्री श्री गोविंदवल्लभ पंतजी विनोबाजीसे मिलने आये। अुन्हें यहां ठहरना तो नहीं था, परंतु यह गांव अुनके रास्तेमें पड़ता था, अिसलिअे यहां रुककर विनोबाजीसे मिले और बहुत प्रेमसे बातें कीं। अुन्हें मिलना तो वे कबका ही चाहते थे। जिस दिन विनोबाजी अिस सूबेमें आये अुसी दिन अुनका तार आया। अुसमें अुनका स्वागत किया था और लिखा था—"मौका मिलने पर मैं आपसे मिलना चाहता हूं। आप हमारे सूबेमें घूमेंगे, अिससे हमको बहुत लाभ होगा।" आज तीन माहके बाद दोनों मिल पाये हैं। मिलते ही विनोबाजीने कहा: "आसमानमें भटकनेवाले दो ग्रह आज संयोगसे मिल गये।"

भूदान-आन्दोलन, कानूनके महत्त्व आदिके बारेमें काफी बातें हुअीं। वातावरण परिवर्तनकी स्पष्ट अनुभूति माननीय पंतजीने प्रकट की और कहा: "आपने काफी जागृति की। जमीनकी मिकदार कम हो तो भी यदि अितना मानसिक परिवर्तन हो जाता है, तो कानूनका काम सरल बन जाता है।" विनोबाने कहा: "अिसीलिअे हमने कानूनको आखिरी मुहर—'सील' नाम दिया है।" तब पंतजीने फौरन कहा: "'सील' न समझनेसे ही प्रतिशोधकी भावना पैदा होती है। आपके अिस कामसे अैसा न हो सकेगा।"

आज दिन भर विनोबाजी व्यस्त रहे। पंतजीकी मुलाकातके बाद लोगोंसे चर्चा, कताअी, भाषण, प्रार्थना और शामको अेक मजदूर कार्यकर्ताके साथ भूदानके विविध पहलुओं पर विस्तारसे बौद्धिक चर्चा हुअी।

सर्वोदय संमेलन

शामके प्रार्थना-प्रवचनमें विनोबाजीने बताया कि आगामी सर्वोदय संमेलन सेवापुरी (बनारस) में ता० १२ से १५ अप्रैल १९५२ तक रखना तय हुआ है। तब तक अगर हरअेक जिलेसे १०००० अेकड़ भूदान मिल जाय, तो अुनका पांच लाख अेकड़का लक्ष्य पूरा हो सकता है। यह जिलेवार हिस्सा बहुत कम है, और अगर भूमिपति अपना कर्तव्य समझ जाते हैं, तो वे अेक बड़ी अहिंसक क्रान्ति कर देते हैं।

भूदान यात्राके दूसरे फल

भूदानकी यह यात्रा किस प्रकार कार्यकर्ताओंकी अेक ट्रेनिंग-शाला और लोक-संग्रहका केन्द्र बन सकती है, अिसे समझाते हुअे विनोबाने कहा: "मुझे अभी यहां आये तीन माह होते हैं तथा अभी जून तक और घूमना है। अेक मास मेरा मध्यप्रदेशमें बीता। सालमें ९ मास घूमनेके और ३ मास बारिशके होते हैं, अिस तरह पूरा अेक साल हो जाता है। मुझे खुशी है कि अुस अुत्तर प्रदेशसे, जो हिन्दुस्तानका हृदय है, मेरा विशेष परिचय होगा, हर जगहके कार्यकर्ता मिलेंगे और हर जिलेसे मैं गुजरा, तो वहांके काम करनेवालोंके साथ परिचय होगा।

"भूमिदान-यज्ञ तो चलेगा ही, लेकिन जिनके साथ मेरा संपर्क होगा अुनके जीवनसे मेरा संबंध जुड़ जायेगा। मान लीजिये कि ५० जिलोंमें से १-१ कार्यकर्ता अैसा मिल जाय, जो शान्ति, अहिंसा आदि पर पूरा विश्वास रखता हो और काम करता हो। अहिंसामें यह खूबी है कि लाखों कार्यकर्ताओंके संगठनसे जो काम होता है, अुससे कम कार्यकर्ता भी पूर्ण निष्ठावान रहें, तो ज्यादा काम होता है। पूर्ण निष्ठावान लोग अिस कामको जितना आगे ले जा सकते हैं, अुतना लाखों लोग नहीं ले जा सकते। जो परमेश्वरसे प्रेम करते हैं, अहंकार नहीं रखना चाहते, किसी पक्षमें अपनेको दाखिल नहीं होने देते—अैसे ५० कार्यकर्ता भी यदि अिसमें मुझे मिल जायं, तो पूरे हिन्दुस्तानकी शकल बदल जाती है। क्योंकि यही असली काम है। यह कोअी खयाली काम नहीं है। अभी देखिये, मेरी अिस मुसाफिरीमें अेक बंगाली भाअी १०-१५ दिन साथ रहे। निष्ठा लेकर गये। अभी दक्षिणसे अेक और भाअी मेरे अिस कामको देखनेके लिअे आये हैं।" मौजूदा काम किस प्रकार रचनात्मक काम करनेवालोंको भी तेजस्वी बना सकता है, अिसका जिक्र करते हुअे अुन्होंने बताया: "आज रचनात्मक काम करनेवालोंमें कुछ मायूसी-सी छा गअी है। जो चित्र अुनके सामने था और जो वे चाहते हैं, वह नहीं बन सका। फलतः यह मायूसी आ गअी है और वह अिस महान् कार्यक्रमसे हट सकती है। अेक तेज अुत्पन्न होगा, जो अुनके कामको, अुनको और देशको अहिंसक क्रान्तिकी दिशामें अग्रसर करेगा।"

देनेका आदेश

फिर पंतजीके साथकी मुलाकातका जिक्र करते हुअे विनोबाने कहा: "हिन्दुस्तानमें आज लेने ही लेनेकी बात सोची जाती है, देनेकी नहीं। हरअेकको अिसीकी फिक्र लगी है कि हम दूसरेको कैसे लूटें, अुससे कैसे छीनें? पर मैंने तो ठीक अिससे अुल्टी बात चलाअी है। मैं तो देनेकी बात कहता हूं। लेना तो छोटीसी चीज है, लेकिन देना बड़ी चीज है। परंतु लेनेकी नीयत रखते हैं, तो हम दुनियाके टुकड़े करते हैं, स्वार्थी बनते हैं। जहां लेते हैं, वहां छीना-झपटी चलती है। यह हिन्दुस्तानके लिअे शोभाकी बात नहीं है। अलावा अिसके, यहां हिन्दू, मुसलमान, पारसी सब रहते हैं। अगर लेनेकी बात चलायें, तो यहां प्रेम और शक्ति नहीं रह सकती। अगर देनेकी बात करेंगे, तो हिन्दुस्तान अेक बना रहेगा, खुशबू फैलेगी, दुनियाको अिससे आशा रहेगी। यही मौका है जब भारतका असर दुनिया पर होगा। यहां सर्वोदय-संमेलन हुआ था। अुसमें दूसरे देशोंके लोगोंने भी भाग लिया था। सर्वोदय-समाजमें २००-३०० बाहरके देशोंके लोग हैं। यहांके बारेमें बाहरवालोंको दिलचस्पी रहती है। हमारे प्राअिम-मिनिस्टरकी तरफ बाहरी देशोंका ध्यान रहता है। हमारे देशमें जो हलचलें चलती हैं, अुनसे कोअी अच्छी चीज निकलेगी, अैसी दुनियाको आशा है। यदि देनेकी हवा चल जाय, तो हिन्दुस्तान तो बचेगा ही, दुनिया भी बच जायगी।

"जिसको हम जमीन देते हैं, अुसको आलसी नहीं बनाते, बल्कि मशक्कत करनेकी प्रेरणा देते हैं। वह गरीब नहीं बनता। जो देता है अुसका भी लाभ, जो लेता है अुसका भी लाभ। जिस गांवमें लेने और देनेवाले अेक-दूसरे पर प्रेम करने लगेंगे, वह गांव अेक शक्तिशाली गांव बन जायगा। हम गोकुलकी बातें सुनते हैं कि कृष्ण अपने घरका सारा मक्खन गांवके लोगोंको बांट देते थे। महाभारत पढ़ते हैं, रामायण पढ़ते हैं, तो ५ पांडव कितने प्रेमसे रहते थे यही तो सीखना है। रामचन्द्रजीने बंदरोंसे कैसा प्रेम किया, यही तो सब हमें सीखना है।

"कुरानमें भी कहा है—'जो भी थोड़ी रोजी मिली है, अुसमें से थोड़ासा औरोंको भी देना चाहिये।' आठ आना मिलता है, तो २ आना देना चाहिये। मैं पैसेकी बात नहीं करता। आपके घरमें जो भी हो, सब देना चाहिये। अपने जिस्मको भूलकर अुसे सेवामें लगा देना चाहिये। तभी हम परमेश्वरका काम करते हैं। यह हर मजहब हमें सिखाता है। कोअी अल्लाका नाम लेते हैं, कोअी राम-लक्ष्मणका।

www.vinoba.in

लेकिन सब परमेश्वरकी सेवा करते हैं। अैसा यदि हो तो हमारे यहां सब प्रेमसे रह सकते हैं। नामके तो हिन्दू, मुसलमान, पारसी हैं, पर कामके बहुत थोड़े। मैं चाहता हूं कि सब सच्चे हिन्दू बनें, सच्चे मुसलमान बनें, सच्चे पारसी बनें। सच्चे वे होते हैं, जो सत्य बोलते हैं, कभी मुंहसे कड़वी बात नहीं निकालते, प्रेमसे रहते हैं, सबकी सेवा करते हैं। वही सच्चे हिन्दू, सच्चे मुसलमान और सच्चे पारसी हैं।

"जमीनकी मांग तो मेरी लाखों अेकड़की है। यह अेक नयी चीज लगती है। पर दरअसल यह नयी चीज नहीं है। हरअेकको समझना चाहिये कि अुसके पास जो भी है, वह सारा दूसरोंके लिअे दिया जाना चाहिये।"

(अलग-अलग रिपोर्टोंसे संकलित)

सोयाबीनके दूध और दही—१

[मैसूरके फूड रीसर्च अिन्स्टिट्यूट — खुराक संशोधक संस्था —के वैज्ञानिक डॉ० मूरजानी और अुनके मित्रोंका सोयाबीन और मूंगफलीके दूधके विषय पर अेक लेख ता० १२-१-'५२ के 'हरिजन' में छप चुका है।

सन् १९३० और '४० के दरमियान सोयाबीनने जनताका ध्यान आकर्षित किया था। ग्रामोद्योग संघकी स्थापनाके शुरूके दिनोंमें गांधीजीने भी अिस पर कुछ प्रयोग किये थे। लेकिन अुस वक्त सोयाबीन या मूंगफलीका दूध बनानेकी विधि वर्धाकी संस्थाओंको मालूम नहीं थी। और खुराकके रूपमें सोयाबीन दूसरी दालोंके मुकाबलेमें पचनेमें ज्यादा आसान नहीं मालूम हुअी। अिसलिअे वह प्रयोग आगे नहीं बढ़ा।

सेवाग्रामके श्री कृष्णचंद्रजी विज्ञानके स्नातक हैं और खुराक पर प्रयोग करनेका शौक रखते हैं। अुन्होंने सोयाबीनका दूध-दही बनानेकी विधि मालूम कर ली है और अुस पर प्रयोग भी कर रहे हैं। अिस लेखमें अुनके अब तकके प्रयोग और अनुभवका संक्षिप्त बयान है। —कि० ध० मं०]

पू० विनोबा अक्सर कहा करते थे कि प्राणिज दूध छोड़नेका प्रयोग आश्रम जैसी संस्थामें होना चाहिये। परंधाममें अुन्होंने दूध प्रायः बंद कर रखा था। स्नेहकी पूर्तिके लिअे आवश्यक प्रोटीनके रूपमें अुबाली हुअी मूंगफलीका 'मक्खन' (páste) देते थे। प्राणिज दूध छोड़नेके पीछे अुनकी तीन दृष्टियां थीं। वे कहते थे: (१) "ब्रह्मचारीको दूध कहां होता है? अिसलिअे ब्रह्मचर्यके भंगसे पैदा होनेवाला दूध पीकर ब्रह्मचर्यका पालन कैसे हो सकता है?" (२) जनसंख्या जैसे-जैसे बढ़ेगी, वैसे-वैसे 'प्राणिज' प्रोटीनका आधार छोड़कर हमें 'वनस्पति' प्रोटीन पर आना होगा। क्योंकि अुतना ही पोषण प्राप्त करनेमें हमें 'प्राणिज' प्रोटीनके लिअे कअी गुनी अधिक जमीनकी जरूरत पड़ेगी। अिसलिअे 'वनस्पति' प्रोटीनकी संभावनाओंकी शोध अभीसे जरूरी है। (३) अहिंसाके विकास-क्रममें भी वे मांससे दूध पर और अब दूधसे केवल वनस्पति पर आ जाना सहज-प्राप्त मानते हैं। (गी० प्र० अ० १६)

अिन विचारोंका असर मेरे मन पर काम कर रहा था। लेकिन मूंगफलीके 'मक्खन' के बजाय, जिसका प्रयोग पू० विनोबाने परंधाममें चलाया था, सोयाबीनके अधिक गुणकारी होनेकी बात मैं बीच बीचमें पू० विनोबाके कान पर डालता रहता था। कारण यह कि सोयाबीनके प्रोटीन मूंगफलीसे अधिक अच्छे यानी प्राणिज प्रोटीनका स्थान लेनेमें समर्थ हैं। सोयाबीनकी दूसरी विशेषतायें भी थीं, परंतु विनोबाजीका कहना था कि सोयाबीन और मूंगफली दोनों किसी बच्चेके सामने रखें, तो वह मूंगफलीको ही ज्यादा पसंद करेगा। फिर भी मैं सोयाबीनके बारेमें अपनी जानकारी धीरे-धीरे बढ़ाता गया और जब मनमें यह निश्चय हो गया कि सोयाबीन निश्चित रूपसे अुत्तम है, तो अुसकी तलाशमें लगा। (क्योंकि वह आम तौर पर बाजारमें नहीं मिलती)। जिन लोगोंने अिसके प्रयोग किये थे, अुनसे भी अिसके बारेमें पूछताछ शुरू की। लेकिन सोयाबीनके दूधका प्रयोग किसीने नहीं किया था।

आखिर पिछले मअी महीनेमें सोयाबीनका आटा रोटीमें मिलानेकी शुरुआत की। ५ से १०% तक मिलानेसे भी रोटी मुलायम तो हो जाती थी, लेकिन वह पचनेमें भारी लगी। सिर्फ जुवारकी रोटीमें जो स्वाभाविक मिठास होती है, वह अिस मिश्रित रोटीमें नहीं पाअी गअी। साथियोंको भी नहीं रुची। बादमें दूध बनानेकी विधि जाननेका प्रयत्न शुरू किया। कुनूर आदि संस्थाओंसे पत्रव्यवहार किया गया। और जबसे दूध बनाना आरंभ हुआ, तभीसे मैंने गायका दूध लेना अेकदम बंद कर दिया। पहले मैं दो रतल गायका दही लेता था। अुसे कम करते करते लगभग पाव रतल पर आ गया। सोयाबीनका दही अेक पाव लेना शुरू किया। अुतना ही अभी भी चालू है। पहले हमने जिस विधिका आधार लिया था, अुसमें सोयाबीनका दूध बननेकी प्रक्रिया नहीं हो पा रही थी। लेकिन अधिक जानकारीके अभावमें हमने अुसीको दूध मान लिया था। अिसलिअे वह दूध और दही दोनों खानेमें रुचिकर और पचनेमें आसान साबित नहीं हुअे। बादमें हमें सच्ची विधि मालूम हुअी। वह पहले तो असफल-सी ही लगी। लेकिन सुबह जब जमा हुआ दही देखा, तो सभी अुस पर मुग्ध हो गये और सबको प्रतीति हो गअी कि यही सच्चा दही है, अिससे पहलेवाला तो नाममात्रका था। बस, फिर अिसी विधिको हमने आगे बढ़ाया। अनुभव हो जानेसे झंझटें भी कम पैदा हुअीं। छोटे-मोटे सुधार भी दाखिल होते गये। आज स्थिति यह है कि अेक बहन, जो हमेशा अिससे भागती थीं — भले कभी-कभी अिसकी कढ़ीका अुपयोग वे करती रही थीं — भी अिसे लेने लगी हैं। बच्चोंने तो प्रायः शुरूसे ही सोयाबीनके दही पर प्रेम बताया। बात यह है कि सोयाबीनके दही (हमने प्रायः दहीके रूपमें ही अिसका अुपयोग किया है, क्योंकि वह दूधकी अपेक्षा अधिक रुचिकर होता है।) में थोड़ा कडुवापन और दालका-सा स्वाद आता है। वह भी अब चूना मिलानेसे काफी कम हो गया है।

जहां तक पचनेका संबंध है, जबसे हमने सुधरी हुअी विधिका आश्रय लिया है, तबसे बच्चेसे लेकर बूढ़े तक किसीने अिस बारेमें कोअी शिकायत नहीं की। बल्कि अिसके बारेमें जो साहित्य है, वह बताता है कि सोयाबीनका दही अधिक 'नरम' (low curd-tension) होनेके कारण ज्यादा सुपाच्य है। और अिसीलिअे सोयाबीनका दूध-दही खास करके शिशुओं और रोगियोंको दिया जाता है। सोयाबीन 'क्षारधर्मी' (alkaline) होनेके कारण अिसका आकर्षण और भी बढ़ जाता है, क्योंकि सभी अनाज, दाल, तेल, घी प्रायः अम्ल (acidic) होते हैं। गायका दूध-दही (४ पौंड) आधा बंद करके अुसकी जगह सोयाबीनका दूध-दही लेनेसे शक्ति या वजनमें कमी नहीं आअी है। मेरा निजी अनुभव कुछ विशेष ढंगका रहा है। पहले मेरा वजन २ पौंड गायका दही और ८-१० तोला गुड़ लेनेके बावजूद ९३ पौंडसे अधिक बढ़ता ही न था। लेकिन अब गत ४-५ मासमें ३-४ पौंड बढ़ गया है। गुड़ कुल मिलाकर २ तोलेसे अधिक नहीं लिया, न आहारमें ही दूसरा कोअी खास फर्क किया। अब तकके आहार-शास्त्रके अध्ययन परसे मेरे लिअे यह प्रयोग अब अेक सहज प्राप्त धर्म ही बन गया है; और जब तक अिस बारेमें शंकाको कोअी स्थान नहीं मिलता, तब तक वह छूट नहीं सकता। वैसे शंकाके लिअे अभी तक कोअी अवकाश नजर नहीं आता। बल्कि दिन ब दिन जो नअी शोध हो रही है, वह अिसके अेक न अेक नये ही गुण प्रकट कर रही है।

www.vinoba.in

यह दूध-दही घर-घर बनाया जा सकता है और पशुके दूध-दहीकी अपेक्षा यह ज्यादा समय तक अच्छी हालतमें रह सकता है। बिल्ली अुसे नहीं खाती। आगामी अंकमें अिसे बनानेकी पूरी विधि दूंगा।

कृष्णचंद्र

अलीगढ़ विद्यापीठमें विनोबाजी

ता० ६ नवम्बरको तीन बजे अलीगढ़ विद्यापीठमें वहांके छात्रों तथा प्रोफेसरोंके सामने विनोबाजीका भाषण हुआ। विद्यापीठवालोंने अत्यन्त प्रेमपूर्वक विनोबाजीका स्वागत किया। स्वागत करते हुअे अलीगढ़ विद्यापीठके अुपकुलपति डॉ० जाकिरहुसेन साहबने विनोबाजीकी विद्वत्ता, योग्यता और नेकीके बारेमें अपनी श्रद्धा भावभरे शब्दोंमें प्रगट की। अुन्होंने आगे कहा: "वाज लोग हैं जो विनोबाजीकी बातोंको शायद पसन्द न करें। परन्तु अुनके पसन्द करने न करनेसे विनोबाजीका काम रुकनेवाला नहीं।

'पत्ता पत्ता बूटा बूटा हाल हमारा जाने है
जाने न जाने गुल न जाने बाग तो सारा जाने है।'

"विनोबाजी अुन लोगोंमें से हैं, जो कौमोंको बिगड़नेसे बचा लेते हैं; जो सोतेको सोने नहीं देना चाहते। वे लोगोंको बुराअियों पर राजी नहीं होने देते। वे अच्छाअियोंकी तरफ लोगोंके दिल मोड़ते हैं। अुनसे कुछ काम कराना चाहते हैं। वे हमारी कौमकी जमीर हैं। हमें कोशिश करनी चाहिये कि यह जमीर बेदार रहे। अगर अैसे आदमीकी आवाज हमारे कानोंको नहीं पहुंचती, तो अुन कानोंका अिलाज करना चाहिये। अगर दिलोंमें नहीं जमती, तो अुन दिलोंका अिलाज कराना चाहिये। विनोबाजी हमसे नामुमकिन बातें करवाना चाहते हैं। वे लोगोंसे अैसी बातें करवाना चाहते हैं, जो अक्सर आसानीसे नहीं बन पातीं। खुशकिस्मत हैं वे, जो अुनकी बातों पर अमलके लिअे तैयार हैं। अुनसे भी खुशकिस्मत हैं वे, जो अुनकी बातों पर अमल कर रहे हैं। और खुशकिस्मत हैं वे भी, जो अुनकी बातोंको समझते हैं। बदकिस्मत हैं वे, जो अपने कानों तक अुनकी आवाज पहुंचने नहीं देते। अपने दिलोंमें अुसे जमने नहीं देते।

"विनोबाजी अिस वक्त जमीन मांग रहे हैं। वे सारे मुल्कमें अपने पैरोंमें कांटे झेलकर भी घूमना चाहते हैं, ताकि मालदारों और पेटभर खानेवालोंसे बेजमीन और भूखोंके लिअे जमीन मुहय्या कर दें। अुनका काम अेक अिन्कलाबी काम है। हम सबको अुसमें जी जानसे हाथ बंटाना है।"

अिसके बाद पू० विनोबाजीका करीब अेक घंटे तक विद्यार्थियोंके संमुख भाषण हुआ। (वह अलगसे अिस अंकमें दिया जा रहा है।) भाषणके बाद डॉ० जाकिरसाहबने विनोबाजीकी अपेक्षाओंको मद्देनजर रखते हुअे विद्यापीठके बारेमें फली हुअी गलतफहमीको दूर करनेकी दृष्टिसे पुनः अपना निवेदन किया। जाकिरसाहबने कहा: "मेरा खयाल है कि हिन्दुस्तानमें अिस वक्त अैसी कोअी तालीमगाह नहीं, जो अिस्लामको अिससे अच्छे नमूनेमें पेश कर सके। आज यह काम हमारे लिअे और भी अहम हो गया है। अिस तालीमगाहके पीछे अेक विचार है। विचार तो और भी हैं, लेकिन खासकर यह विचार है कि हमारी कौम, मुसलमानोंकी, मगरिबसे आनेवाली तालीमको समझे। अिस तालीमगाहको बनानेवालोंका संबंध अंग्रेजोंसे आया। अुसकी लंबी दास्तान है। अिस तालीमगाहने देशके दो टुकड़े किये। पाकिस्तानके बनानेवाले यहीं पैदा हुअे। लेकिन जो हुआ वह हो चुका। अब जो शख्स हमसे यहांकी नागरिकताका हक छीनना चाहे, वह देशका खैरख्वाह नहीं है। हम यहांके हैं। अिस जमीनका अेक अेक जर्रा अुतना ही हमारा है, जितना किसी हिन्दू या सिक्ख या अीसाअीका हो सकता है। वे शख्स देशके दुश्मन हैं, जो हमें पाकिस्तानी बताते हैं। ये लड़के, जो आपके सामने बैठे हैं, जानवर नहीं, अिनसान हैं। मैंने अुन्हें अुनके अैबोंके लिअे भला-बुरा कहा है। लेकिन वह कौन है, जो अिन्हें बुरा कह सकता है? विनोबाजी! मेरी आपसे शिकायत है। मैं अपनी कौमकी जमीरसे कहता हूं कि वह कौमको झूठसे बचाये। हमारे बारेमें यहां झूठा प्रचार किया गया है। यह अच्छा नहीं है।

"आज आपको हमारे लिअे दो-तीन मील ज्यादा चलना पड़ा है। हम आपको यकीन दिलाते हैं कि अिसके बदले ये बच्चे दो सौ मील चलेंगे और आपके भूदानके काममें अपना हिस्सा बटावेंगे।"

विनोबाजी अेक बार बोल चुके थे। लेकिन जाकिरसाहबके भाषणके बाद अुन्होंने फिरसे दो शब्द कहना जरूरी समझा। जाकिरसाहबने अपने दिलका सारा दर्द विनोबाजीके सामने खोल कर रख दिया था। अुनका वह हक भी था, और फिर आज बापूके बाद वे अपने दिलके घाव विनोबाजीको नहीं दिखाते तो किसे दिखाते? विनोबाजीको अुन्होंने कौमकी जमीर (हृदय–सद्बुद्धि) कहा। अिसी परसे जाहिर है कि वे विनोबाजीको कितने आदर और श्रद्धासे देखते हैं। अंतमें सभाका समारोप करते हुअे विनोबाजीने कहा: "जाकिरसाहबने बहुत अच्छा किया कि यहां जो कुछ हुआ, वह सब जिक्र अुन्होंने मुझे कह सुनाया। अखबारोंमें जो खबरें आती हैं, वे किस ढंगकी होती हैं अिसका मुझे अनुभव है। अिसलिअे अखबारी बातों पर मैं कभी विश्वास नहीं करता। अखबारोंको जिम्मेदारीका अहसास होना चाहिये कि अगर कोअी चीज कहीं बनी भी हो, तो अुसकी जांच करके ही अुस बारेमें कुछ कहें। आपने जो बातें कहीं अुनसे आशा है कि सारी गलत-फहमी दूर हो जायगी। मैं अुम्मीद करता हूं कि सब मिल-जुलकर हमारे मुल्ककी तरक्कीके लिअे कोशिश करेंगे। नदी अेक जगहसे निकलती है। अुसमें नाले भी आकर मिलते हैं। परंतु गंगा अुसीकी बनती है। यह युनिवर्सिटी गंगाकी तरह पाक है और पाक बनेगी। यह तो साफ है कि जहां डॉ० साहब जैसे व्यक्ति मौजूद हैं, वहां किसीको शक करनेकी जरूरत ही नहीं होनी चाहिये। हंस मानसरोवर पर ही रहते हैं।"

विनोबाजीके भाषणके बाद डॉक्टर जाकिरसाहबने पुनः कहा: "हमारे अेक दोस्त, जो अपना नाम जाहिर नहीं करना चाहते, विद्यापीठके छात्रोंकी ओरसे भूदान-यज्ञमें सौ बीघा जमीन दे रहे हैं।"

तालियोंके बीच अिस घोषणाका स्वागत किया गया।

विनोबाजीने यहांके अरबी-विभागका बारीकीसे निरीक्षण किया और कुरानकी कितनी ही हस्तलिखित सुन्दर पुरानी प्रतियां देखकर खुशी प्रगट की।

विद्यापीठके थोड़ी देरके सुखद संस्मरणका जिक्र विनोबाने आजकी सार्वजनिक सभामें भी किया।

दा० मूं०

सर्वोदयका सिद्धान्त

कीमत ०–१२–० डाकखर्च ०–३–०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद–९

विषय-सूची

		पृष्ठ
अिस्लामकी सीख	विनोबा	४३३
स्वराज्यकी प्रतिज्ञाकी पूर्ति	दा० मूं०	४३५
प्रार्थनाके विशेष अंग	कि० घ० मशरूवाला	४३६
हलवाहीके खेत	बाबा राघवदास	४३७
दो और दिलाओ	दा० मूं०	४३८
सोयावीनके दूध और दही–१	कृष्णचन्द्र	४३९
अलीगढ विद्यापीठमें विनोबाजी	दा० मूं०	४४०
टिप्पणी:		
सर्वोदय-संमेलन	वल्लभस्वामी	४३५

www.vinoba.in